ज़रिया

लेखिका का परिचय - ज़रिया कहानी की लेखिका चित्रा मुद्गल है। आप का जन्म 10 सितंबर 1944 चेन्नई में हुआ।

शिक्षा - प्राथमिक शिक्षा भरतीपुर के कन्या पाठशाला में -
हायर सेकेंडरी पूना बोर्ड से
शेष पढ़ाई मुंबई विश्वविद्यालय से।
फाइन आर्टस का अध्ययन जे.जे. स्कूल ऑफ़ आर्टस से।

कृतियाँ - जिनावर, वेईमान, अढाई गज की ओढ़नी आवां, एक ज़मीन अपनी

पुरस्कार सम्मान - २०१४ में साहित्य अकादमी सम्मान
१९९३ में हिन्दी अकादमी दिल्ली के साहित्यकार सम्मान
२००० में यू.के. कथा सम्मान
२००३ में व्यास सम्मान

उनकी कहानियों में नारी-अधिकारों के लिए संघर्ष दिखाई पड़ता है, यही नहीं नारी तथा परिवार की अनेक समस्याओं का चित्रण मिलता है। प्रस्तुत कहानी में समाज में व्याप्त स्वार्थ प्रवृत्ति तथा अपनी पहचान को तड़पती नारी का चित्रण की।

कहानी में वर्तमान समाज की गतिविधियों में बढ़ती स्वार्थ प्रवृत्ति तथा लोगों की यूज़ एण्ड थ्रो [Use & Throw] वाली मानसिकता का वास्तविक चित्रण किया गया।

लेखिका चाहती है कि विवेक जैसे लोगों को 'ज़रिया' (साधन) बनाकर दूरदर्शन और फिल्मी जगत में प्रवेश कर जाए। पर विवेक की सोच अलग है, वह दूरदर्शन का जाल बिछाकर मुंबई में अपना काम निपटाता है, इसके लिए लेखिका को 'ज़रिया' (साधन) बनाती है

आधुनिक समाज में यह आम चीज़ बन गयी कि कुछ लोग समाज में प्रतिष्ठा, पैसा आदि पाने के लिए दूसरे लोगों का इस्तेमाल बड़ी चालाकी से करते हैं। इस काम में उनकी कमजोरियों से फ़ायदा उठाते है। इस प्रक्रिया में कौन किसके काम का ज़रिया (साधन) बना यह कहानी के अन्त में ही प्रकट होता है, कहानी के मूल तत्व को अपने में समेट लेने के कारण कहानी के लिए 'ज़रिया' शीर्षक अत्यन्त समुचित है।

पात्र और चरित्र चित्रण

मैं [लेखिका] —

1. इस कहानी का मुख्य पात्र, इसीसे सारी कहानी घूमती है।
2. इसका एक सुखी परिवार है, एक आदर्श गृहिणी है, इसके पति 'निगम' हैं जो इंजनीयर है, दो बच्चे सहित पारिवारिक जिम्मेदारियों की गृहिणी थी।
3. उसकी रुचि लेखन में है, इसलिए कई कहानियाँ और उपन्यास लिखी।
4. वह सदा यही सोचती थी कि समाज में उसकी अच्छी पहचान बने और लेखिका के रूप में प्रतिष्ठा हो जाए।
5. वह आधुनिक जीवन की कई परिस्थितियों से निराश है जिनके खिलाफ वह अपनी रचनाओं में आवाज उठाती है।
6. वह स्वयं अनेक बंधनों को स्वीकार नहीं करती और इच्छा के अनुसार जीवन यापन करती है।
7. वह एक सभ्य महिला है। इसी बीच में शहरीय नाट्य विद्यालय के भूतपूर्व छात्र विवेक बत्तरा से मुलाकात होती है।
8. दिल्ली के रहनेवाला विवेक और लेखिका के बीच पत्र व्यवहार हो रहा था, एक पल में विवेक यह प्रस्ताव की लेखिका की कहानी दूरदर्शन में प्रसारण के लिए अधिकारियों ने स्वीकार की। इस बात से लेखिका की खुशी का ठिकाना न था।

9. इसी विचार से विवेक को वह में आशय देती है कि यदि वह फिल्मी अभिनेता बन जाए तो मुंबई फिल्मी जगत में भी उसका प्रवेश आसान बन जाएगा।

10. जब उसे पता चलता है कि उसकी कहानी का चयन दूरदर्शन में नहीं हुआ तब वह बड़ी निराश हो जाती है।

11. उसे आश्चर्य होता है कि विवेक उसके साथ झूठ क्यों बोला, उसे आधुनिक जीवन के धोखेबाजी तथा झूठे व्यवहार का उतना ज्ञान नहीं है।

इस पात्र के द्वारा लेखिका सभी महिलाओं की महत्वाकांक्षाओं का चित्रण करती है और साथ-साथ यह चेतावनी भी देती है कि धोखेबाजों की झूठी बातों में न पड़े।

विवेक खत्तरा

1. विवेक खत्तरा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का भूतपूर्व छात्र है और दिल्ली के निवासी है।
2. वह रंगमंच का अनुभवी रंगकर्मी है, वह मुंबई फिल्मी जगत में प्रवेश पाना चाहता है।
3. उसे दिल्ली के दूरदर्शन में सभी अधिकारियों से अच्छे परिचय हैं और वह दूरदर्शन के माध्यम से अनेक कार्यक्रमों में भाग ले चुका।
4. एक बार मुंबई के फिल्मी निर्माता उसे बुलाता है

सी सिलसिले में उसे मुंबई में ठहरने की आवश्यकता
पड़ती है।

5. वह स्वार्थी है। इसलिए लेखिका की कमजोरी का गलत उपयोग करता है, पत्राचार में उसे झूठ बोलता है कि उसकी कहानी का चयन किया गया। जल्दी से इस पर फिल्म बननेवाली है।

6. लेखिका उसके जाल में फँसकर उसे आश्रय देती है, विवेक खुशी से अपना काम देखकर चला जाता है। लेखिका के पूछने पर वह कहता है कि उसकी रचना का तिरस्कार किया गया। वास्तव में लेखिका की किसी रचना का प्रस्ताव वह दिल्ली दूरदर्शन में नहीं करता।

विवेक धोखेबाजी, स्वार्थी है, इस पात्र के माध्यम से लेखिका ने सभी नारियों को चेतावनी दी कि इन जैसे कपटी लोगों से सावधान रहें।

उद्देश्य

1. वर्तमान गतिविधियों में व्याप्त धोखेबाजी-झूठे व्यवहार तथा लोगों में बढ़ती स्वार्थ-प्रवृत्ति का पर्दाफाश करना ही इस कहानी का मुख्योद्देश्य है।

2. नारी-पहचान का बहाना बनाकर कैसे उसका शोषण किया जाता है — लेखिका की कहानी दूरदर्शन से स्वीकृति नहीं मिली, विवेक उसको झूठ बोलकर अपना काम पूरा कर गया। इस तरह के मार्मिक उद्घाटन करते हुए ऐसे धोखेबाजों से

बनकर रहने का संदेश देना ही कहानी का मुख्य उद्देश्य है।

3. कहानी का गौण उद्देश्य समाज में फैलती कीर्तिकांक्षा का चित्रण करना भी है। इसी कांक्षा के चलते लेखिका जैसी अनेक महिलाओं के कारण विवेक जैसे लोगों को ठगने का मौका मिल जाता है।

4. साथ-साथ आधुनिक जीवन के अनेक पहलुओं का चित्रण करना भी कहानी का एक अन्य उद्देश्य है।

कथावस्तु

लेखिका जो कहानी का एक प्रधान पात्र है, वह नगर जीवन की एक सभ्य महिला है, उसके पति निगम इंजीनीयर है। वह अपने दो बच्चे से सुखी पारिवारिक जीवन बिताती है। लेखन में रुचि से कई उपन्यास, कहानियाँ लिखी थी। उसे खेद है कि उसकी समाज में एक प्रतिष्ठित लेखिका के रूप में पहचान नहीं मिलती। इसी बीच 'विवेक वत्तरा' नामक युवक जो राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का भूतपूर्व छात्र से परिचय होता है।

पत्राचार के द्वारा पता चलता है कि विवेक ने लेखिका की एक कहानी को दूरदर्शन अधिकारियों के सामने सुनाया था, जो प्रसारण हेतु चयन किया गया है। यह पढ़कर लेखिका बहुत खुशी भोगी।

विवेक को एक मुंबई फिल्मी जगत में

मौका मिला, स्क्रीन टेस्ट होनेवाली है। पर विवेक की समस्या है कि मुंबई जैसे मायावी नगर में ठहरने की जगह नहीं। वह पत्र में अप्रत्यक्ष रूप से लेखिका से अनुरोध करता है कि ठहरने की व्यवस्था की जाए। लेखिका भी सोचती कि यदि विवेक फिल्मी अभिनेता बने भविष्य में उसे भी फायदा होगा। उसे ठहरने की व्यवस्था कर देती है। विवेक दिल्ली से आकर मुंबई में लेखिका के घर में रहता और अपना काम देखकर चला जाता है।

लेखिका को अपनी कहानी के दूरदर्शन प्रसारण को लेकर समाचार नहीं मिलता। बहुत समय तक इन्तजार की और विवेक को पत्र लिखती है। जवाब में विवेक लिखता है कि - दूरदर्शन के कुछ अधिकारी लेखिका की कहानी के अनुमोदन के खिलाफ हैं"। लेखिका निराश होकर स्वयं दूरदर्शन को फोन करके पता लगाता है, अपनी कहानी क्यों तिरस्कार किया। अतः दूरदर्शन में प्रसारण के लिए विवेक ने न किसी कहानी का प्रस्ताव न की न तो फिल्म का अनुबंध सौंपा गया है। लेखिका बड़ी दुःख भोगती है कि विवेक ने झूठ बोला। लेखिका के पति निगम उसे समझाते है कि मुंबई में कुछ दिन ठहरने की व्यवस्था पाने के लिए विवेक ऐसा गलत व्यवहार किया होगा, आजकल ऐसी धोखेबाजी सामान्य है।

आधुनिक जीवन के अनेक पहलू के दर्शन इस कहानी में होते हैं साथ ही नारी को सचेत करके ऐसे धोखेबाजों से सावधान रहकर रहें। कहानी बहुत सरल एवं स्वाभाविक है।

भूख हड़ताल

कहानीकार का परिचय - श्री बालशौरी रेड्डी जी का जन्म 1 जुलाई 1928 को आन्ध्रप्रदेश के कडपा जिले के गोल्लल गूडूर नामक गाँव में हुआ। दक्षिण के श्रेष्ठ अहिन्दी भाषी हिन्दी साहित्यकारों में रेड्डी जी एक हैं।

रचनाएँ - शबरी, जिंदगी की राह, स्वप्न और सत्य, दावानल पंचामृत, आंध्र भारती, तेलुगु साहित्य का इतिहास

श्री रेड्डी जी ने कई सालों तक हिन्दी 'चंदमामा' का सफल संपादन किया। संप्रति श्री रेड्डी जी मद्रास में रहते हुए साहित्य सृजन में लगे हुए हैं।

शीर्षक की सार्थकता

एक लकड़हारा का प्रस्ताव - " अपने जैसे करोड़ों लोगों के जीवन की समस्याओं को लेखक के सामने रखता है कि पढ़े-लिखे लोग बड़े भाग्यशाली हैं। वे बैठे-बैठे तनखा लेते हैं और अन्य सुविधाओं के लिए हड़ताल करते हैं। पर हम जैसे गरीबों को इस देश में कोई पूछता ही नहीं। यदि सरकार सबको काम दिलाती है तो हम खुशी खुशी काम करके जीविका चला सकते हैं। पर सरकार हमारी तरफ ध्यान ही नहीं देती, जैसे कि हम मनुष्य हैं ही नहीं। आजादी तो मिल गयी फिर भी इस देश में लाखों और करोड़ों लोग भूखे, नंगे और बीमार हैं। पेट भरने के लिए हमें बहुत कष्ट करना पड़ता है। यह कमबख्त भूख भी हड़ताल करे तो क्या ही अच्छा होता हमारी समस्या अपने आप हल हो जाती।"

लकड़हारे की बातों में सच्चाई है, यदि भूख का

हड़ताल हो तो कोई समस्या ही नहीं। समाज की वर्तमान परि-
स्थितियों का चित्रण करनेवाली इस कहानी के लिए भूख हड़ताल
ही उचित शीर्षक है।

चरित्र चित्रण

1. भूख हड़ताल कहानी में नारायणराव एक लकड़हारा था।
2. स्वाभिमान जीवन बितानेवाला था और उनकी बाधा का
चित्रण है।
3. लकड़हारा हर दिन जलावन बेचकर जीविका चला लेता
है।
4. एक दिन परिवहन विभाग वालों ने हड़ताल किया, फलतः
रेलस्टेशन आता है, पर वहाँ सूना रहा था, लकड़हारा
परेशान होता है कि आज जलावन कोई न खरीदे।
5. उसी समय वहाँ पर किसी मिटिंग हाजिर के लिए
लेखक आते है, लकड़हारा उसे जलावन खरीदने
के लिए अनुरोध करता है। लकड़हारा सस्ते में देना
चाहता है फिर भी लेखक लेना नहीं चाहता।
6. भूखा लकड़हारा की विवशता को जानकर लेखक उससे
कहता है कि "मैं इस समय लकड़ नहीं ले सकता
मगर, तुम्हे दो रुपये ले तो लकड़ी भी साथ में
ले जाओ"।
7. स्वाभिमान नारायण कहता है - "बाबू जी मुझ पर
आप को मेहरबानी दिखाने की जरूरत नहीं, हम कोई
भिखमंगे नहीं है"

'मेहरबानी' से एक दिन की भूखी की समस्या
हमेशा की है, उसे मिटाने का काम सरकार का है।

उद्देश्य

भूख हड़ताल' कहानी में स्वाभिमान जीवन बितानेवाले एक लकड़हारे की मनोभावना, पीड़ा का चित्रण मिलता है। जब कहानीकार, विवश को जानकर लकड़हारा को दो रुपये लेने को कहा तब वह कहता है, "हम कोई भिखमंगे नहीं," स्वाभिमान का यह एक अच्छा नमूना है।

परोक्ष रूप से सरकार की व्यवस्था पर भी द्वेष दिखाया गया। पढ़े-लिखे वालों को वेतन मिलते, लेकिन भूख मिटाने के लिए जो लोग मजदूरी करे उस पर ध्यान न दे रहे हैं। भूख के कारण ही इतनी समस्याएँ।

कथावस्तु

नारायण नामक एक लकड़हारा हर दिन जलावन बेच कर जीविका चला लेता है। एक दिन परिवहन विभाग वालों ने हड़ताल किया है। उस दिन बस-स्टेशन सूना-सूना रह गया।

कहानीकार मद्रास जाने के लिए बस-स्टेशन आता है, परिस्थिति देखकर परेशान होता है कि मीटिंग में कैसे पहुँचे। इतने में लकड़हारा आकर कहानीकार से

अनुरोध करता है कि जलावन खरीदें। लकड़हारा सस्ते में देना चाहता है फिर भी कहानीकार लेना नहीं चाहता क्योंकि इस समय मीटिंग में जाना है।

भूखे लकड़हारे की विवशता को जानकर कहानीकार उससे कहता है कि 'इस समय तो मैं जलावन नहीं ले सकता, तुम ये दो रुपये ले लो लकड़ी भी साथ में ले जाओ।"

लेकिन स्वाभिमान नारायण कहता है - बाबू जी मुझ पर आपको मेहरबानी दिखाने की जरूरत नहीं, हम कोई भिखमँगे, नहीं हैं।

'मेहरबानी' से एक दिन की भूख मिटती है, लेकिन भूख की समस्या हमेशा की है, उसे मिटाने का काम सरकार का है।

परमात्मा का कुत्ता

कहानीकार का परिचय – मोहन राकेश का जन्म 1 जनवरी, 1925 को पंजाब प्रान्त में स्थित अमृतसर के एक सम्पन्न परिवार में हुआ। आप की प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर और उच्च शिक्षा लाहौर के ओरिएंटल कॉलेज में हुई। एम ए करते हुए विश्व विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 'सारिका' पत्रिका का संपादन किये। 'रंगमंच' पर विशेष अध्ययन के लिए इन्हें 'नेहरू फेलोशिप' प्रदान की गयी थी।

इनकी कहानी संकलन – 1. इन्सान के खण्डहर 2. नये बादल 3. जानवर और जानवर 4. एक और जिंदगी 5. फौलाद का आकाश 6. आज के साये 7. रोयें देश 8. एक और दुनिया

यही नही मोहन राकेश अच्छे उपन्यासकार नाटककार भी हैं। वह एक सजग कलाकार थे। आज का आदमी अपने आस-पास की समस्याओं से नितांत अकेला अलग टूट-बिखर रहा है। इस विसंगति से मुक्त के लिए तड़प रहा है। यही तड़प राकेश की रचनाओं में सर्वत्र व्याप्त है। 3 दिसंबर 1972 को अकस्मात् इनकी मृत्यु हो गई।

परिचय - परमात्मा का कुत्ता कहानी के लेखक श्री मोहन राकेश है। प्रस्तुत कहानी में आपने सरकारी कार्यालयों में होते भ्रष्टाचारों का पर्दा - फाश किया है। इन्होंने समकालीन समाज में व्याप्त कार्यालयी भ्रष्टाचार की ओर संकेत किया। एक अधेड़ व्यक्ति सरकारी कार्यालय में पहुँचता है और आते ही जोर से चिल्लाने लगता है, उसका नाम पता नहीं - उसके अनुसार वह 1226/7 हो गया। जब उसे सरकारी कर्मचारी रोकने आते तो 'सरकार के कुत्ते कहता है, स्वयं को 'परमात्मा का कुत्ता' कहता है।

सरकारी कर्मचारी सामान्य लोगों की हड्डियाँ चूसते हैं और सरकार की तरफ से भौंकते हैं, वह आदमी यह भी कहता है कि परमात्मा ने उसे भेजा और वह उसकी तरफ से भौंकता है। इस प्रकार वह खुद को परमात्मा का कुत्ता संज्ञा देकर न्याय की रक्षा जिम्मेदार बताता है।

कुत्ता और भौंकना मात्र प्रतीक है। इन दोनों के लिए जागरूक तथा 'सचेत कार्यवाही' के अर्थ लेने चाहिए। जनता जब सचेत बनेगी तभी भ्रष्टाचारों का नाश होगा। अतः 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी के लिए सार्थक सिद्ध हुई।

उद्देश्य - परमात्मा का कुत्ता कहानी वर्तमान समाज में फैले भ्रष्टाचारों पर लिखी गयी है। कहानी के अन्त में उसका उद्देश्य निहित है। जब अधेड़ व्यक्ति बाहर आकर सभी की तरफ़ विजय गर्व से देखता है और कहता है 'चूहों की तरह रहने से फायदा नहीं कुत्तों की तरह भौंको, अपना काम कराओ"। समाज में फैली गैर जिम्मेदारी ही भ्रष्टाचारों की जड़ है।

अधेड़ आदमी के क्रोध में न्याय है, और ईमानदारी है। वह सरकारी कर्मचारियों को कुत्ते कहकर स्वयं को 'परमात्मा का कुत्ता' ठहराता है। इस गाली में भी तर्कसंगत तथ्य है। स्वयं को 'परमात्मा के द्वारा न्याय की रक्षा करके भेजा गया कुत्ता' कहकर वह यदि जनता सजग होकर सरकारी कर्मचारियों पर टूट पड़े, तो भ्रष्टाचार नहीं होंगे। अतः हरेक नागरिक को चाहिए कि वह अधेड़ आदमी की तरह सजग रहे और भ्रष्टाचारों का अन्त कर दें। घूसखोरी, भ्रष्टाचार, बेईमानी आदि की दवाई एकमात्र जनता का क्रोध है। अतः जनता के सामने वर्तमान समाज की इस ज्वलंत समस्या को रखकर उसका समाधान बतलाना ही इस कहानी का उद्देश्य है

चरित्र चित्रण

अधेड़ आदमी - 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी का मुख्य पात्र है जो बारह सौ छब्बीस वटा सात [1226/7] से ही जाना जाता है। उसकी अर्जी की फाइल का नंबर वही था

अधेड़ आदमी में सरकारी कार्रवाई में होती देरी के प्रति क्षोभ है। वह पाकिस्तानी अपनी गाली की भी सफाई पेश करता है।

अधेड़ आदमी चरित्र का सबसे आकर्षक गुण उसका फक्कड़पन है। वह बाहर जाते वक्त वहाँ इंतजार करते लोगों को भी क्रांतिकारी रुख अपनाने की सलाह देता है। वह निरूपित करता है कि हो-हल्ला करने से ही सरकारी कार्यालयों में काम बनता है। चुप बैठने से कोई फायदा नहीं, अतः सब लोग सजग होकर भ्रष्टाचारों का विरोध करें, यही संदेश 'अधेड़ आदमी' के पात्र के माध्यम से संप्रेषित है।

कथावस्तु

इसमें मोहन राकेश जी ने सरकारी दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा उदासीनता का सजीव चित्रण करते हैं।

कहानी का आरंभ कमिश्नर के दफ्तर के बाहर के दृश्य से होता है। वहाँ मौजूद लोगों को मजबूरी में दफ्तर के चक्कर लगाना पड़ता है, उनके मुँह पर उत्साह नहीं दीखता, बहुत से लोग यहाँ-वहाँ सिर लटकाये बैठे थे -

उसी समय एक निम्न मध्यवर्गीय अधेड़ व्यक्ति
वहाँ पर आता है। जिसे सौ मरले जमीन आवंटन (Allot)
की गई, लेकिन वास्तव में गाड़ढा है। अतः वह उसकी
जगह अन्य जमीन माँगता अर्जी दिया। दो वर्ष बीत गये,
अब तक आवश्यक कार्यवाही नहीं की गई है। वह जब भी
दफ्तर आता है उसे यही समझाकर भेज दिया जाता है
कि थोड़ा वक्त लगेगा। इससे तंग आकर वह व्यक्ति अपने
परिवार के साथ दफ्तर के परिसर में आकर धरना दे देता है।
वह पीड़ित है, सुशिक्षित भी नहीं इसलिए उसकी भाषा में सहज
आक्रोश है, जोर से चिल्लाने लगे, कुछ अपशब्दों के प्रयोग
सुने वहाँ भीड़ जम गया। सामने शोरगुल और भीड़
देखकर चपरासी आकर उसे हटाने की कोशिश करता हुआ
असफल बना। वह कहता है कि कर्मचारियों ने उसका
नाम भी बदल डाला - 'बारह सौ छब्बीस बटा सात', यही
उसकी फाइल का नंबर है।

वह अधेड़ आदमी विवरण प्रस्तुत करता है कि
सरकारी कर्मचारी सब के सब कुत्ते हैं जो आम लोगों की
हड्डियाँ चूसते हैं और सरकार की तरफ़ से भौंकते हैं, पर
वह तो परमात्मा का कुत्ता है जो भगवान की तरफ़ से भौंकता है।
भगवान का कर्तव्य है न्याय की रक्षा करना। अतः वह आज
भौंककर इन सरकारी कुत्तों के कान फाड़ देगा। आखिर वह
धमकी दी वह नंगा होकर कमीशनर साहब के पास जायेगा।
सब कर्मचारी डरने लगे क्यों कि वह अपना कमीज उतारा।
इतने में स्वयं कमीशनर साहब वहाँ आकर उसे अंदर
ले जाते हैं।

आधे घंटे में अधेड़ व्यक्ति का काम पूरा होकर विजय व गर्व के साथ बाहर आते हैं। वह बाहर इंतजार करते लोगों से कहता है कि 'इस तरह चूहों की तरह रहने से काम नहीं बनेगा, जागो - आँखों और कान फाड़ दो'। इस व्यक्ति के व्यवहार से स्पष्ट होता है कि भद्र व्यवहार से सरकार ही नींद नहीं खुलेगी, बेहयाई से ही सरकारी दफ़्तरों से काम होता है।

राकेश इस कहानी के माध्यम से यही बताते हैं कि जनता जब सचेत बनेगी तभी भ्रष्टाचारों का नाश होगा। दुःख की बात यह है कि आज भी सरकारी कार्यालयों की कार्यवाही में भिन्न आचरण दिखाई नहीं पड़ता।

नमूने प्रश्न

1. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी का सारांश लिखिए। } 15 m
2. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी का विवेचन कीजिए। }
3. 'परमात्मा का कुत्ता' शीर्षक कहाँ तक सार्थक है? 5 m
4. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी के मुख्य पात्र का परिचय दीजिए? 5 m
5. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालो। 5 m